सिद्धयोग पथ पर श्रीगुरुगीता के महत्व पर
स्वामी शान्तानन्द द्वारा एक व्याख्या

बाबा मुक्तानन्द ने, शुक्रवार, ०७ जनवरी, १९७२ को गुरुदेव सिद्धपीठ में, आश्रम की दिनचर्या में, प्रातःकालीन अभ्यास के रूप में 'श्रीगुरुगीता' के नित्य पाठ का शुभारम्भ किया था। सिद्धयोग पथ के इतिहास में, प्रति वर्ष एक महत्वपूर्ण दिवस के रूप में सिद्धयोगी इस वर्षगाँठ का सम्मान करते हैं।

संस्कृत में श्रीगुरुगीता "श्री गुरु की स्तुति में गाया गया स्तोत्र गान" है, यह एक अध्ययन करने योग्य शास्त्र तथा जप करने के योग्य मन्त्र है। स्वाध्याय सुधा के परिचय में बाबा जी ने श्रीगुरुगीता के १८२ छन्दोबद्ध श्लोकों का, "एक दीर्घ मन्त्र" के रूप में वर्णन किया है और सिद्धयोग पथ के "एक अत्यावश्यक पाठ" के रूप में इसकी प्रशंसा की है। बाबा जी सिखाते हैं कि श्रीगुरुगीता का पाठ करना स्वाध्याय की अन्तर आत्मा का अध्ययन करने का ही एक रूप है। श्रीगुरुगीता का पाठ, पवित्र ध्वनियों में लीन हो जाने तथा मन्त्र-जप करने का ही एक रूप है।

'श्रीगुरुगीता' पारम्परिक संस्कृत श्लोकों से रचित एक स्तुति है, जिसमें आदि गुरु, परशिव परमेश्वर तथा उनकी प्रिय अर्धाङ्गिनी एवं शिष्या देवी पार्वती के बीच हुए सम्वाद का वर्णन है। इस सम्वाद में परशिव परमेश्वर, श्री गुरु के स्वरूप, गुरु कृपा की शक्ति, गुरु की सेवा एवं भक्ति के महत्व और गुरु द्वारा शिष्य को आत्म-ज्ञान की ओर ले जाने के तरीकों की व्याख्या करते हैं।

परशिव परमेश्वर इस स्तुति की महानता की प्रशंसा करते हुए श्लोक ५२, ६१, १०७ और १३३ में इसे "मन्त्रराज", जिसका अर्थ है, "मन्त्रों का राजा", एक परम मन्त्र बताते हैं। श्लोक १३३ में, भगवान शिव कहते हैं :

> गुरुगीताक्षरैकं तु मन्त्रराजमिमं जपेत्।
> अन्ये च विविधा मन्त्राः कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।।१३३।।

> इस श्रीगुरुगीता का एक-एक अक्षर परम मन्त्र है। अन्य अनेक मन्त्र उसकी सोलहवीं कला के तुल्य भी नहीं हैं।

> गुरुगीता का एक-एक अक्षर परम मन्त्र है। हर एक को इसका जप करना चाहिए।

भारत के विभिन्न शास्त्रों में, 'श्रीगुरुगीता' के कई तरह के संस्करण मिलते हैं। इस पाठ के स्रोतों में से एक का परिचय, सिद्धयोग पथ पर गाए जाने वाले संस्करण की अन्तिम पंक्तियों में मिलता है :

इति श्रीस्कन्दपुराणे उत्तरखण्डे ईश्वरपार्वतीसंवादे
गुरुगीता समाप्ता।

इस प्रकार स्कन्दपुराण के उत्तर खण्ड में ईश्वर-पार्वती-संवादरूप श्री गुरुगीता सम्पूर्ण हुई।

इस प्रकार गुरुगीता समाप्त होती है, जो कि श्री स्कन्दपुराण के उत्तर खण्ड में उल्लेखित परशिव परमेश्वर तथा देवी पार्वती के बीच हुआ सम्वाद है।

'श्री स्कन्दपुराण', भारत के प्राचीन ग्रन्थों में से एक है, जिसमें कहानियाँ, दार्शनिक सिखावनियाँ, स्तुतियाँ, तथा एक गरिमामय जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किए गए हैं। श्रीगुरुगीता के श्लोक, कुछ उपनिषदों तथा तन्त्र-शास्त्रों सहित प्राचीन ग्रन्थों में भी मिलते हैं। ऐतिहासिक रूप से श्रीगुरुगीता के विभिन्न संस्करणों में चारसौ से भी अधिक श्लोक मिलते हैं।

सन् १९५१ में जब बाबा जी, भारत के महाराष्ट्र राज्य के सुकी गाँव में साधना कर रहे थे, उन्होंने भगवान दत्तात्रेय के जीवन पर आधारित सोलहवीं शताब्दी का एक ग्रन्थ 'गुरु चरित्र' पढ़ा। इस ग्रन्थ में श्रीगुरुगीता का एक संस्करण सम्मिलित है जिसका वर्णन श्री स्कन्दपुराण में किया गया है। बाबा जी इस शास्त्र की गहनता और मनोहरता की ओर आकर्षित हुए और तत्काल ही उन्होंने इसका पाठ आरम्भ कर दिया। बाबा जी ने बाद में गुरु चरित्र के इस अनुभाग से कुछ और श्लोक सम्मिलित कर श्रीगुरुगीता का यह संस्करण तैयार किया जिसका पाठ सिद्धयोग पथ पर किया जाता है।

०७ जनवरी, १९७२ को जब बाबा जी ने श्रीगुरुगीता के पाठ को आश्रम की दिनचर्या के एक भाग के रूप में सम्मिलित किया तब उन्होंने कहा था :

आज ही प्रातःकाल हमने श्री गुरुगीता का पाठ करना आरम्भ किया है।. . . . यह सर्व शक्ति एवं सिद्धि प्रदान करता है।. . . . इस आश्रम का नाम है, 'श्री गुरुदेव आश्रम', यह श्री गुरुदेव को समर्पित है, और हम श्रीगुरुगीता का स्तवन करते हैं. . . क्योंकि श्री गुरु हमारे परम इष्टदेव हैं।

गुरुमाई जी ने सिद्धयोगियों को सिखाया है कि किस प्रकार श्रीगुरुगीता की अपनी समझ, अभ्यास और अनुभूतियों को और गहरा किया जाए। तीन दशकों से भी अधिक समय से गुरुमाई जी ने सत्संगों तथा शक्तिपात ध्यान शिविरों में इस पवित्र स्वाध्याय के बारे में सिखावनियाँ प्रदान की हैं और उन्होंने सिद्ध विद्यार्थियों तथा सिद्धयोग ध्यान शिक्षकों को श्रीगुरुगीता पर कार्य-शाला एवं पाठ्यक्रम आयोजित करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया है। गुरुमाई जी ने सिद्ध विद्यार्थियों को स्वाध्याय के अपने अभ्यास को सुदृढ़ करने हेतु अपने उच्चारण, आसन एवं श्वास-प्रश्वास को परिष्कृत करने के लिए निर्देश प्रदान किए हैं। गुरुमाई जी ने सिद्ध विद्यार्थियों को अपने चित्त की एकाग्रता बनाए रखने तथा संयुक्त स्वर के साथ गायन में सम्बल प्रदान करने हेतु श्रीगुरुगीता के पाठ में संगीत का परिष्करण भी लागू किया है।

गुरुमाई जी ने सिद्धयोगियों और नए जिज्ञासुओं के साथ कई देशों में श्रीगुरुगीता का पाठ किया है और हज़ारों हृदयों में इस शास्त्र के प्रति प्रेम जाग्रत किया है। सिद्धयोग आश्रमों में, आश्रम की दिनचर्या में, प्रातःकालीन अभ्यास के रूप श्रीगुरुगीता का नित्य पाठ किया जाता है। सिद्धयोग ध्यान केन्द्रों पर तथा सिद्धयोगियों के घरों में इसका पाठ दैनिक एवं साप्ताहिक रूप से विभिन्न समयों पर किया जाता है। अभी इस क्षण भी विश्व में किसी न किसी स्थान पर श्रीगुरुगीता के पाठ द्वारा आशीर्वादों का आवाहन किया जा रहा होगा।

मैं एस. वाय. डी. ए. फ़ाउण्डेशन को अपनी प्रसन्नता और कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने १५ अलग भाषाओं में, श्रीगुरुगीता के संस्कृत पाठ के अनुवाद प्रकाशित किए हैं। इससे कई विभिन्न राष्ट्र के लोगों के लिए इस पवित्र स्वाध्याय का पठन एवं अध्ययन सम्भव हो गया है। श्रीगुरुगीता से लोगों ने किस प्रकार आशीर्वाद प्राप्त किए हैं और इस अभ्यास ने उनकी साधना को किस प्रकार और गहरा किया है, इसकी कई कहानियाँ सामने आई हैं। श्रीगुरुगीता में वर्णित यह बात बिल्कुल सत्य है। इस पवित्र स्वाध्याय का पाठ करने से जीवन के चारों पुरुषार्थों की सिद्धि होती है : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

मेरे अपने अध्ययन, मनन और अनुभव से तथा श्रीगुरुगीता का नियमित पाठ करने वाले अन्य सिद्धयोगियों से जो मैंने सुना है उसके अनुसार, इस अभ्यास के अनगिनत लाभ हैं। यह कुछ लाभ हैं जिनसे कोई भी अपनी साधना में प्रगति कर सकता है :

कृपा का आवाहन
भक्ति का पोषण
मन की शान्ति
श्वास-प्रश्वास की सुदृढ़ता व मुक्ति
विवेक एवं भावनाओं की शुद्धि
एकाग्रता में वृद्धि
संरक्षण प्राप्ति

इस वर्षगाँठ के सम्मान में, मन्त्र-जप के अमृतपान का आनन्द लें और श्रीगुरुगीता की पवित्र ध्वनियों में लीन हो जाएँ। अपने जीवन में इसकी रूपान्तरकारी शक्ति की पहचान करें।

©२०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन'। सर्वाधिकार सुरक्षित।